

**Note :** If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – [www.jainelibrary.org](http://www.jainelibrary.org) and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

## Rajendrasuri Smarak Granth

Folder No.	012068
Granth Name	Rajendrasuri Smarak Granth
Author	Yatindrasuri
Publisher	Saudharmbruhat Tapagacchiya Jain Swetambara Shree Sangh, Aahor
Edition	1
Year	1957
Pages	986

## श्रीमद् राजेन्द्रसूरि स्मारक ग्रन्थ

फोल्डर नं.	०१२०६८
ग्रन्थ	श्रीमद् राजेन्द्रसूरि स्मारक ग्रन्थ
लेखक	यतीन्द्रसूरि
प्रकाशक	सौधर्मबृहत्तपागच्छिय जैन श्वेताम्बर श्री संघ आहोर
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९५७
पृष्ठ	९८६

मुख्य टाइटल  
श्री राजेन्द्रसूरि वचनामृत  
धन्यवाद और अभिनन्दन  
सम्पादकीय वक्तव्य  
विषय सूचियाँ  
राजेन्द्र खण्ड  
गुरुगुणाष्टक और स्मरणाञ्जलि  
संस्कृत  
हिन्दी  
गूर्जर  
English  
व्यक्तित्व और साहित्यिक जीवन  
हिन्दी  
गूर्जर  
राजेन्द्र पुष्पाङ्क  
हिन्दी  
दर्शन और संस्कृति

आचार्य मल्लवादी का नयचक्र-दलसुख मालवणिया ----- १९१  
जैन दर्शन-महात्मा भगवानदीनजी ----- २११

उत्सर्ग और अपवाद-उपा. अमरचंदजी -----	२१९
जैन धर्म का कर्मवाद-पं.चैनसुखदासजी -----	२२९
कर्मबंधन और मोक्ष-पं.मिश्रीलाल बोहरा -----	२३४
विश्व के विचारप्रांगण में जैन तत्त्वज्ञान की गंभीरता-रतनलाल संघवी -----	२३६
अपरिग्रह-गणेशप्रसादजी वर्णी -----	२५८
जीवों की वेदना-कन्हैयालालजी मुनि -----	२७४
मरण कैसा हो-उपा. हस्तिमलजी -----	२८७
भारत की अहां संस्कृति-जयभगवान जैन -----	२९८
जीवन और अडिंसा-ज्ञानमुनि -----	३२६
जैन धर्म में स्त्रियों को समान अधिकार-सावलिया विहारीलाल वर्मा -----	३३२
उपासक दशांगसूत्र में सांस्कृतिक जीवन की झांकी-नरेन्द्रकुमार भानावत -----	३४४
रूपं रूपं प्रतिरूपो बूव-वासुदेवशरण अग्रवाल -----	३५३
सृष्टिकर्ता ईश्वर नहीं-कांतिविजयजी -----	३६०
भारतीय संस्कृति के आधार-मंगलदेव शास्त्री -----	३६५
पूर्वशिया में भारतीय संस्कृति-रघुवीर आचार्य -----	३७७
विशिष्ट योगविद्या-देवेन्द्रविजयजी -----	३८४
<b>जिन, जैनागम और जैनाचार्य</b>	
जैनागमानाम्परिचय-कल्याणविजयजी -----	४०२
श्रीमतीर्थङ्करा: तद्वैशिष्ट्य-कल्याणविजयजी -----	४०६
विश्व के उद्धारक-अभयसागरजी -----	४११
तीर्थकर और उसकी विशेषतायें-लक्ष्मीचंद जैन -----	४१६
भद्रबाहु श्रुतकेवली-कैलाशचन्द्र शास्त्री -----	४२७
विमलार्य और उनका पउमचरियं-ज्योतिप्रसाद जैन -----	४३७
यशपुर का ऐतिहासिक महत्व एवं श्री आर्यरक्षितसूरि-मदनलाल शास्त्री -----	४५२
मालवमनीषी श्री प्रभाचन्द्रसूरि-एस.एन. व्यास -----	४६०
वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि-ऋषभदास रांका -----	४६२
देवेन्द्रसूरिकृत नव्य कर्मग्रंथ-मोहनलाल महेता -----	४६६
लुंकाशाह और उनके अनुयायी-भंवरलाल नाहटा -----	४७०
उपा. मेघविजयजी गुम्फिता अर्हद्दीता-पं. रमणीकविजयजी -----	४७८
आ. श्री राजेन्द्रसूरिजी की ज्ञानोपासना-अगरचंद नाहटा -----	४८६
युगपुरुष श्री राजेन्द्रसूरि-पुण्यविजयजी -----	४९२
अपभ्रंश साहित्य का मूल्यांकन-देवेन्द्रकुमार -----	४९६
<b>जैन धर्म की प्राचीनता और उसका प्रसार</b>	
प्राङ्ऐतिहासिक काल में जैन धर्म-कामताप्रसाद जैन -----	५०४
जैन धर्म की ऐतिहासिक खोज सुशीलकुमारजी मुनि -----	५०९
जैन धर्म की प्राचीनता और उसकी विशेषतायें – उदयलाल नागोरी -----	५२९
प्राचीन जैन साहित्य में मुद्रा संबंधी तथ्य-उमाकान्त पी. शाह -----	५३५
राजपूताना में जैन धर्म-वासुदेव उपा. -----	५४५
राजस्थान में जैन धर्म का ऐतिहासिक महत्व-कैलाशचन्द्र जैन -----	५४८
जैनागमों में महत्त्वपूर्ण कालगणना-अगरचंद नाहटा -----	५६४
महावीरस्वामी का मुक्तिकाल-निर्णय-सी.डी. चटर्जी -----	५८०
महावीर की वास्तविक जन्मभूमि वैशाली-योगेन्द्र मिश्र -----	५८४
<b>ललित कला और तीर्थमन्दिर</b>	

कोरटाजी तीर्थ का प्राचीन इतिहास-यतीन्द्रसूरिजी -----	५९१
तीर्थक्षेत्र श्री लक्ष्मणीजी-जयन्तविजयजी -----	५९७
राजस्थान के जैन मंदिर-पूर्णचन्द्र जैन -----	६०२
मथुरा की जैन कला-कृष्णदत्त वाजपेयी -----	६०८
जैनस्थापत्य और शल्प अथवा ललितकलादौलतसिंह लोढा -----	६१३
<b>हिन्दी जैन साहित्य</b>	
हिन्दी और हिन्दी जैन साहित्य-अगरचंद नाहटा, दौलतसिंह लोढा -----	६१७
जैन धर्म की हिन्दी को देन-राहुल सांकृत्यायन -----	६५०
जैन विद्वानों की हिन्दी सेवा-कस्तूरचन्द्र कासलीवाल -----	६५६
संत साहित्य के निर्माण में जैन हिन्दी कवियों का योगदान-परशुराम चतुर्वेदी -----	६६३
जैनाचार्यों की छन्दशास्त्र के लिये देन-गुलाबचन्द्र चौधरी -----	६७६
पुराण और काव्य-पन्नालाल साहित्याचार्य -----	६८७
जैन कथा साहित्य-फूलचन्द्र जैन -----	६९३
राजस्थानी जैन साहित्य-अगरचन्द्र नाहटा -----	७०३
जीवन की अंतिम साधना-सत्यदेव विद्यालंकार -----	७२३
राजेन्द्रसूरि अभिनन्दनम्-दुखमोचन झा -----	७२८
<b>गूर्जर</b>	
योगानंदधन-पादराकर -----	७२८
जैनदर्शनमां विज्ञान-कांतिलाल मोहनलाल पारेष -----	७४३
संडेरकना पेशशाह-विशालविजयशु -----	७४८
अप्रसिद्धप्राय पांच पूर्वभवो-अभयसागरशु -----	७५५
आचार्य देवभद्रे करेलुं देवद्रव्यना मौलिक भेदोनुं वर्णन-कल्याणविजयशु -----	७५४
हिंदु धर्म इति-जैन दृष्टिये-मजुमदार -----	७५८
जैनदार्शनिक साहित्य अ सम्बन्धपरीक्षा-जम्भूविजयशु -----	७७४
<b>English</b>	
Omniscient Beings-Harisatya Bhattacharya -----	790
Jaina, Darsan, Caritra-B C Law-----	805
Cultural Relation between India & Japan-Kijiro Miyako -----	814
Doctrine of Jainism Alledgedly-Aryadeva, Hajime Nakamura,-----	817
Anuttaraupapatika Sutra-K H Kamdar -----	820
Antiquity of Jainism-Kelashchandra Jain -----	825
Authors and Subjects studied in Rajasthan from the 8th to 18th Century A.D. – Dasaratha Sharma-----	841
Phagu-Poem on the Simhasanbatrisi-Bhogilal J Sandesara -----	867
संदेश -----	८७०